

[2023] 2 एस. सी. आर 1112

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

ए.

एमएस. एक्स

बी.

महाराष्ट्र और अन्य राज्य (2023 की आपराधिक अपील संख्या 822-823)

बी.

17 मार्च, 2023

[ए. एस. बोपन्ना और हिमा कोहली, जे. जे.]

दंड प्रक्रिया संहिता, 1973-एसएस।437,438 और 439-दंड संहिता, 1860-एस. एस.354,354-बी, 376 और 506-अग्रिम जमानत-रद्द करना-अपीलार्थी द्वारा दायर एक शिकायत-अभियोजक, प्रत्यर्थी No.2-accused के खिलाफ, जिसने उसे कुछ मॉडलिंग असाइनमेंट देने का लालच दिया, एक होटल के कमरे में उसके साथ बलात्कार किया जहां वह रह रही थी-शुरू में, यू/एस. एस. में प्राथमिकी दर्ज की गई थी।354, 354-भारतीय दण्ड संहिता सी. के बी और 506, और बाद में, अपीलार्थी के पूरक बयान दर्ज किए जाने पर, अपराध यू/एस।376 एफ. आई. आर. में जोड़ा गया-उच्च न्यायालय ने प्रत्यर्थी संख्या 2 को इस आधार पर अग्रिम जमानत दी कि अपीलार्थी ने अपने बयान में सुधार किया था-अपील पर, अभिनिर्धारित किया:कथित अपराध की प्रकृति और गंभीरता और अपीलार्थी की तुलना में अभियुक्त की वित्तीय स्थिति, स्थिति और स्थिति की उच्च न्यायालय द्वारा अवहेलना और उपेक्षा की गई थी-प्राथमिकी में पर्याप्त सामग्री थी जो प्रथम दृष्टया एस के प्रावधान को आकर्षित करेगी।376, भारतीय दण्ड संहिता सी.-अपीलार्थी द्वारा उच्च न्यायालय के समक्ष प्रत्यर्थी संख्या 2 द्वारा दायर अग्रिम जमानत के लिए याचिका में हस्तक्षेप के लिए आवेदन दायर करने के बावजूद, उसकी सुनवाई नहीं की गई-अपीलार्थी के अलावा कोई अन्य गवाह नहीं है, उच्च न्यायालय को सुनवाई का अवसर देना चाहिए था-अग्रिम जमानत की मंजूरी को कायम नहीं रखा जा सकता है-उच्च न्यायालय के आदेश को रद्द कर दिया गया और खारिज कर दिया गया।

सी.

डी.

ई.

एफ.

अपीलों का निपटारा करते हुए, न्यायालय ने

आयोजित किया गया: **1.** कथित अपराध की प्रकृति और गंभीरता की उपेक्षा की गई है। इसलिए अपीलार्थी/अभियोजक की तुलना में अभियुक्त के वित्तीय कद, स्थिति और स्थिति की अनदेखी की गई है। उच्च न्यायालय ने प्रत्यर्थी संख्या **2/अभियुक्त** के पक्ष में तीन पैराग्राफ के एक संक्षिप्त आदेश में अग्रिम जमानत प्रदान की है, जो "अभियोजक के कथन में स्टार भिन्नताओं" से प्रभावित हुआ है, जिसका अर्थ है कि क्या था

जी.

एच.

1112 ए.

1113

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और एक अन्य ए

मूल रूप से एफ. आई. आर. में दर्ज, बलात्कार का अपराध नहीं है, जैसा कि भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा **375** में परिभाषित किया गया है, जो एक गलत धारणा है। भले ही अपीलार्थी/अभियोजक का **6 अगस्त, 2022** की शाम को दर्ज किया गया पहला पूरक बयान, जिस तारीख को प्रत्यर्थी के खिलाफ उसी दिन की पहली छमाही में प्राथमिकी दर्ज की गई थी, उसका दूसरा पूरक बयान **6 सितंबर, 2022** को दर्ज किया गया और डॉक्टर की चिकित्सा-कानूनी रिपोर्ट जिसने **8 अगस्त, 2022** को अपीलार्थी/अभियोजक की जांच की थी, को एक पल के लिए अलग रखा जाता है, इस अदालत ने पाया कि प्राथमिकी में अभी भी पर्याप्त सामग्री थी जो प्रथम दृष्टया भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा **376** के प्रावधान को आकर्षित करेगी। इस न्यायालय की राय में, इन कारकों को उच्च न्यायालय को प्रत्यर्थी के पक्ष में अपने विवेकाधिकार का प्रयोग करने या उसे अग्रिम जमानत देने से मना करना चाहिए था। [पैरा **22**] [**1131-ई-जी; 1132-ए-बी**]

बी.

सी.

2. आक्षेपित आदेशों में हस्तक्षेप करने के लिए इस न्यायालय के साथ एक अन्य कारण यह है कि अपीलार्थी/अभियोजक ने उच्च न्यायालय के समक्ष प्रत्यर्थी संख्या **2/अभियुक्त** द्वारा दायर अग्रिम जमानत याचिका में हस्तक्षेप के लिए आवेदन दायर करने के बावजूद, उसे सुनवाई का खर्च नहीं दिया गया था। कम से कम दूसरे विवादित आदेश का अवलोकन उक्त स्थिति को

नहीं दर्शाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि राज्य उपस्थित था और उक्त कार्यवाही में उसका प्रतिनिधित्व किया गया था, लेकिन अभियोजक के अधिकार को केवल इसी कारण से कम नहीं किया जा सकता था। इस प्रकार के अपराध में जहां आम तौर पर, स्वयं अभियोजक के अलावा कोई अन्य गवाह नहीं होता है, उच्च न्यायालय के लिए अपीलार्थी को अपनी बात सुनाना और भी अधिक अनिवार्य था। इस तरह का दृष्टिकोण आपराधिक कार्यवाही में भाग लेने के अभियोजक के अधिकार को पहचानने में विफलता के समान है जिसमें अभियुक्त द्वारा अग्रिम जमानत के लिए दायर आवेदन का विरोध करने का अधिकार शामिल होगा। जब प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त के पक्ष में दिए गए अग्रिम जमानत के पहले विवादित आदेश की पुष्टि दूसरे विवादित आदेश द्वारा की गई थी, तब अपीलार्थी/अभियोजक को एक सार्थक सुनवाई से वंचित कर दिया गया था, यह एक अतिरिक्त कारक है जो इस न्यायालय के साथ विवादित आदेशों में हस्तक्षेप करने के लिए प्रबल है। [पारस 23,25] [1132-बी-डी; 1133-एफ-जी]

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

1114 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 2 एस. सी. आर.

सुशीला अग्रवाल और अन्य बनाम राज्य (दिल्ली का राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)

और एक और (2020) 5 एससीसी 1:[2020] 2 एस. सी. आर. 1-अनुसरण किया गया।

प्रशांत कुमार सरकार बनाम आशीष चटर्जी और एक अन्य

(2010) 14 एससीसी 496:[2010] 12 एससीआर 1165; मसरूर बनाम.

उत्तर प्रदेश राज्य और दूसरा (2009) 14 एस. सी. सी.

बी.

286 :[2009] 6 एस. सी. आर. 1030; कल्याण चंद्र सरकार बनाम.

राजेश रंजन उर्फ पप्पु यादव और एक अन्य (2004) 7 एस. सी. सी. 528; मायकला धर्मराजम और अन्य बनाम तेलंगाना राज्य और एक अन्य (2020) 2 एस. सी. सी.

743; प्रदीप राम बनाम झारखंड राज्य और एक अन्य (2019) 17 एस. सी. सी.

सी.

326 :[2019] 8 एस. सी. आर. 824-निर्भर।

सी. बी. आई. बनाम अमरमणि त्रिपाठी (2005) के माध्यम से यू. पी.

8 एससीसी 21:[2005] 3 पूरका।एससीआर 454; प्रह्लाद सिंह

भट बनाम एन. सी. टी., दिल्ली और अन्य **(2001) 4 एस. सी. सी. 280:[2001] 2 एस. सी. आर. 684;** राम गोविंद उपाध्याय बनाम सुदर्शन सिंह और अन्य **(2009) 14 एस. सी. सी. 286:[2009] 6 एस. सी. आर. 1030;** महाराष्ट्र राज्य बनाम रितेश

डी.

(2001) 4 एससीसी 224:[2001] 2 एस. सी. आर. 438; पंचानन

मिश्रा बनाम दिगंबर मिश्रा और अन्य **(2005) 3 एस. सी. सी. 143:[2005] 1 एससीआर 484;** विजय कुमार बनाम नरेंद्र और अन्य **(2002) 9 एससीसी 364;** अनवरी बेगम बनाम शेर

ई.

मोहम्मद एंड अदर (2005) 7 एस. सी. सी. 326:[2005] 3

पूरका।एस. सी. आर. **287;** नीरू यादव बनाम उत्तर प्रदेश राज्य

और एक और (2014) 16 एससीसी 508:[2014] 12 एससीआर 453;

अनिल कुमार यादव बनाम राज्य (एन. सी. टी. दिल्ली) और अन्य

(2018) 12 एससीसी 129:[2017] 11 एस. सी. आर. 195; महिपाल बनाम

एफ.

राजेश कुमार उर्फ पोलिया एंड अदर **(2020) 2 एससीसी**

118 :[2019] 14 एस. सी. आर. 529; सर्वोच्च भिवंडी वाड़ा

मनोर इन्फ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड बनाम महाराष्ट्र राज्य और एक अन्य (2021) 8 एस. सी. सी. 753; जगजीत सिंह और अन्य बनाम आशीष मिश्रा उपनाम मोनू और

एक और (2022) 9 एस. सी. सी. 321-संदर्भित।मामला कानून संदर्भ

जी.

[2010] 12 एस. सी. आर. 1165 पर निर्भर

पैरा 8

[2009] 6 एससीआर 1030

उस पर भरोसा करें

पैरा **13 [2005] 3 पूरका.एस. सी. आर. 454** पैरा **12 ए.** में निर्दिष्ट है।

एच.

1115

एम. एस. एक्स. बनाम महाराष्ट्र राज्य और एक अन्य ए

[2001] 2 एससीआर 684

संदर्भित किया गया है

पैरा **12**

[2009] 6 एससीआर 1030

संदर्भित किया गया है

पैरा **12**

[2001] 2 एससीआर 438

संदर्भित किया गया है

पैरा **12**

[2005] 1 एससीआर 484

संदर्भित किया गया है

पैरा **13**

बी.

[2005] 3 पूरका.एस. सी. आर. 287 संदर्भित

पैरा **13**

[2014] 12 एससीआर 453

संदर्भित किया गया है

पैरा 13

[2017] 11 एससीआर 195

संदर्भित किया गया है

पैरा 13

[2019] 14 एससीआर 529

संदर्भित किया गया है

पैरा 13

सी.

[2020] 2 एससीआर 1

पीछा किया।

पैरा 15

[2019] 8 एससीआर 824

उस पर भरोसा करें

पैरा 19

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2023 की आपराधिक अपील संख्या 822-823।

डी.

2022 के ए. बी. ए. सं. 2594 में बंबई उच्च न्यायालय के दिनांकित 21.09.2022 और 07.10.2022 के निर्णय और आदेश से।आर. बसंत, वरिष्ठ अधिवक्ता, सुबोध के. आर. पाठक, अभिजीत चटर्जी, शाहसी रंजन, पवन कुमार शर्मा, गौतम बरुआ, आकाश स्वामी, रवि पी. वाधवानी, अधिवक्ता।अपीलार्थी के लिए।

ई.

संजय के. हेगड़े, वरिष्ठ अधिवक्ता, धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा, अखिलेश सिंह, सुश्री नीतू सिंह, अरुण अधलखा, नितिन लोनकर, सिद्धार्थ धर्माधिकारी, आदित्य अनिरुद्ध पांडे, भारत बागला, अमित सिंह, लोकेश दत्त शर्मा, अधिवक्ता।प्रत्यर्थीगणओं के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

एफ.

हिमा कोहली, जे.

1. अनुमति प्रदान की गई।

2. अपीलार्थी/अभियोजक, जो दावा करता है कि प्रत्यर्थी No.2/accused के हाथों कुख्यात कास्टिंग काउच सिंड्रोम की भयावहता का सामना करना पड़ा है, 21 सितंबर, 2022-1 और 07 अक्टूबर, 2022-2 के आदेशों से व्यथित है, जो बॉम्बे में उच्च न्यायालय द्वारा अपने आपराधिक अपीलीय अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करते हुए पारित किए गए हैं।

जी.

1 पहला विवादित आदेश: 2 दूसरा आक्षेपित आदेश

एच.

1116

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

मुंबई के एम. आई. डी. सी. पुलिस थाने में प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त द्वारा दर्ज की गई अग्रिम जमानत याचिका 3 को स्वीकार करते हुए। शुरुआत में, भारतीय दंड संहिता 5 की धारा 354, 354-बी और 506 के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई थी। इसके बाद, अपीलार्थी/अभियोजक का पूरक बयान दर्ज किए जाने पर, धारा 376 के तहत अपराध को विषय एफ. आई. आर. में जोड़ा गया। पहले विवादित आदेश द्वारा, उच्च न्यायालय ने प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त को कुछ शर्तों के अधीन एक अंतरिम उपाय के रूप में पूर्व-गिरफ्तारी जमानत प्रदान की और 7 अक्टूबर 2022 को उक्त आदेश की पुष्टि की।

बी.

मामले के तथ्य

3. वर्तमान अपीलों पर निर्णय लेने के लिए प्रासंगिक मामले के तथ्यों को संक्षेप में बताया गया है:-

सी.

3.1 अपीलार्थी/अभियोजक पेशे से एक मॉडल है। उसने 5 अगस्त, 2022 के अंतिम घंटों में प्रत्यर्थी संख्या 2/आरोपी के खिलाफ पी. एस. एम. आई. डी. सी., मुंबई में शिकायत दर्ज कराई, जब उसने पुलिस को फोन करने के लिए '100' डायल किया और आरोप लगाया कि प्रत्यर्थी No.2/accused, एक व्यवसायी, जिसने उसे कुछ मॉडलिंग असाइनमेंट की पेशकश करने का लालच दिया और फिर खुद को उस पर मजबूर किया और एक होटल के कमरे में उसके साथ बलात्कार किया जहां वह रह रही थी।

डी.

3.2 एम. आई. डी. सी. पुलिस स्टेशन, मुंबई में 06 अगस्त, 2022 के शुरुआती घंटों में दर्ज अपीलार्थी के बयान का प्रासंगिक हिस्सा नीचे दिया गया है:-

ई.

".....इसके बाद हमने अपने काम के बारे में चर्चा की, उसके बाद जिग्नेश ने मुझसे कहा कि वह मुझसे कुछ व्यक्तिगत बात करना चाहते हैं इसलिए उन्होंने मुझे कमरे में जाने के लिए कहा। फिर जिग्नेश मुझे नौकरी देने जा रहा है इसलिए रात को लगभग 11.15 बजे मैं उसे होटल के कमरे में ले गया। फिर मैंने उससे पानी माँगा लेकिन उसने मना कर दिया। फिर उन्होंने मुझसे कहा।

एफ.

कि, "XXX तू जो फील्ड में काम करता है, वो फील्ड में मुझे तुम्हारे लिए करता है क्या क्या करना पड़ता है" (XXX आप जानते हैं कि, क्या

जिस क्षेत्र में आप काम कर रहे हैं वहां चीजों को करने की जरूरत है), उस समय मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से बोलने के लिए कहा था। फिर उन्होंने मुझे बताया कि, "XXX कुछ पाने के"

जी.

लिए कुछ खोना पड़ता है "(XXX व्यक्ति को त्याग करना पड़ता है।

कुछ पाने के लिए)। उस समय मैंने उनसे कहा था कि मैंने आपको पहले ही दिन इस बारे में बता दिया है। उस समय उन्होंने कहा था कि

3 2022 की अग्रिम जमानत आवेदन संख्या 2594

4 2022 की सी. आर. एफ. आई. आर. संख्या 915 06 अगस्त, 2022 को दर्ज की गई 5 संक्षेप में 'आई. पी. सी.' ए.

एच.

1117

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य [हिमा कोहली, जे.] ए.

कि, आपको मेरे साथ समझौता करना होगा, मेरे अच्छे संपर्क हैं। उस समय मैंने उसे स्पष्ट रूप से मना कर दिया था। इसके बाद वह उठा।

बिस्तर और मुझे बिस्तर पर धकेल दिया और उसने मेरी छाती को छुआ और

पीछे की ओर। फिर मैंने चिल्लाना शुरू किया और फिर उसने मेरी गर्दन पकड़ ली और मुझे जान से मारने की धमकी दी और फिर उसने अपनी शर्ट के बटन खोले और उसने मेरे कपड़े खोलने की कोशिश की। बीच में मेरी मैक्सी गर्दन और छाती के पास फट गई और फिर उसने अपने हाथ से अपना निजी हिस्सा निकाला और वह मेरे साथ अंतरंगता करने लगा और फिर मैंने उसे जबरन धक्का दिया और कमरे से बाहर निकल गया और फिर मैं सीढ़ियों से रिसेप्शन में उतर गया और 100 नंबर पर पुलिस को फोन किया।-

बी.

सी.

“..... फिर वह बिस्तर से उठे और मुझे जोर से धक्का देकर बिस्तर पर धकेल दिया। इस बार उन्होंने मेरी छाती और पीछे को छुआ और मेरी पोशाक को उठाया जो मैंने पहनी थी। जैसे ही मैंने चिल्लाया और उससे विनती की कि वह मेरे साथ ऐसा न करे, उसने मेरा गला पकड़ लिया और मुझे जान से मारने की धमकी दी। उस समय मेरा पूरा शरीर कांप रहा था, मैं पूरी तरह से डर गया था, मुझे कुछ पता नहीं था। फिर उसने अपनी कमीज उतार दी, अपनी पैंट उतार दी और मेरे कपड़े उतारने की कोशिश की। हमारे बीच झगड़ा हो रहा था और मेरी मैक्सी मेरी गर्दन के पास और छाती के पास फट गई थी। हाथापाई के दौरान, उन्होंने मेरे निक्कर को नीचे खींचा और अपने हाथ से अपने निजी हिस्से को बाहर निकाला और मेरे निजी हिस्से में डालने की कोशिश की। फिर मैंने उसे जोर से धक्का दिया और मैंने दरवाजा खोला और बाहर भाग गया, फिर उसने कहा, "अगर आप बाहर जाकर इस बारे में कुछ कहेंगे तो मैं आपको और आपके परिवार को मार दूंगा।" वह ऐसी धमकी दे रहा था तो मैं भी कमरे से बाहर आ गया।

डी.

ई.

एफ.

3.4 यह अपीलार्थी/अभियोजक का मामला है जो प्रत्यर्थी नं. 2/अभियुक्त, पुलिस ने एफ. आई. आर. दर्ज करते समय जानबूझकर उसके बयान के एक महत्वपूर्ण हिस्से को हटा दिया था और केवल आई. पी. सी. की धारा 354, 354-बी और 506 के तहत अपराधों का उल्लेख किया था; कि पुलिस ने जानबूझकर अपीलार्थी/अभियोजक को प्रत्यर्थी द्वारा बलात्कार के आरोप लगाने पर भी चिकित्सा जांच के लिए नहीं लिया था; हालाँकि पुलिस लगभग 11 बजे अपीलार्थी/अभियोजक द्वारा किए गए कॉल पर होटल आई थी: 00 5 अगस्त, 2022 को शाम को और उसे और प्रत्यर्थी संख्या 2/आरोपी को पुलिस स्टेशन ले जाया गया था, उसे 11 बजे से इंतजार कराया गया था: 30 अपराह्न 05 बजे तक: 00 6 अगस्त, 2022 को सुबह और उस अवधि के दौरान, उन पर लगातार दबाव डाला जा रहा था

जी.

एच.

1118

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त के साथ मामले को निपटाने के लिए; कि जब अपीलार्थी/अभियोजक किसी भी समझौते के लिए सहमत नहीं हुआ, तो पुलिस को प्राथमिकी दर्ज करने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकिन तब भी, उन्होंने प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त के पक्ष में अपराधों को कम कर दिया था।

घटनाओं का क्रम:

बी.

4. 6 अगस्त, 2022 को ही, दोपहर के समय, पुलिस ने प्रत्यर्थी संख्या 2/आरोपी को अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट 6, XXII अदालत, अंधेरी, मुंबई की अदालत के समक्ष पेश किया और उसकी न्यायिक हिरासत की मांग की, जिसे विद्वान ACMM द्वारा 20 अगस्त, 2022 तक की अनुमति दी गई थी। समकालीन रूप से, प्रत्यर्थी No.2/accused ने विद्वान ACMM के न्यायालय में जमानत के लिए एक आवेदन दायर किया, जिसका राज्य की ओर से उपस्थित अतिरिक्त लोक अभियोजक ने इस आधार पर विरोध किया कि अपराध गैर-जमानती है; अभियोजक का बयान अभी तक दंड प्रक्रिया संहिता 8 की धारा 164 के तहत दर्ज नहीं किया गया था, अनुसंधान अभी भी जारी थी; और यदि रिहा किया जाता है, तो प्रत्यर्थी No.2/accused सबूतों के साथ छेड़छाड़ कर सकता है। हालाँकि, उक्त आवेदन को विद्वान ए. सी. एम. एम. द्वारा दिनांक 06 अगस्त, 2022 के आदेश के माध्यम से अनुमति दी गई थी।

सी.

डी.

5. जाँच दल द्वारा कथित रूप से अपनाए गए अनौपचारिक दृष्टिकोण से व्यथित होकर, अपीलार्थी/अभियोजक ने क्षेत्र के पुलिस उपायुक्त से संपर्क किया, जिन्होंने उनके अनुसार, पुलिस को सक्रिय कर दिया और 7 अगस्त, 2022 को उन्होंने उसे अपना आगे का बयान दर्ज करने के लिए बुलाया। उक्त बयान के आधार पर, भारतीय दण्ड संहिता की धारा 376 के तहत अपराध को प्राथमिकी में जोड़ा गया था। इस प्रकार, भारतीय दण्ड संहिता की धारा 376, 354, 354-बी, 506 और 506 (2) के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई। उसी दिन, जांच अधिकारी ने अपीलार्थी/अभियोजक को एक पत्र संबोधित किया जिसमें उससे 8 अगस्त, 2022 को अपनी चिकित्सा जांच के लिए उपस्थित होने का अनुरोध किया गया था। एक

महिला पुलिस अधिकारी के साथ अपीलार्थी/अभियोजक को 08 अगस्त, 2022 को ग्रेटर मुंबई अस्पताल के नगर निगम ले जाया गया, जहाँ डॉक्टर ने उसकी चिकित्सा जांच की और निम्नलिखित दर्ज किया:-

ई.

एफ.

“उत्तरजीवी द्वारा दिए गए इतिहास के अनुसार 25 वर्षीय महिलाएँ मारोल अंधेरी पश्चिम में होटल सिल्वर आईएनएन में थीं। उत्तरजीवी की मुलाकात जिग्नेश मेहता से 48 साल पहले हुई थी। समय 11.15 बजे के आसपास पुरुष। 5.8.2022.

जी.

6 संक्षेप में 'एसीएमएम'

7 संक्षिप्त 'सी. आर. पी. सी.' के लिए जमानत आवेदन No.2279/BA/2022 8।

एच.

1119

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य [हिमा कोहली, जे.] ए.

ए.

जिग्नेश ने उत्तरजीवी के गुप्तांगों, छाती, पेट को छुआ और उसने उत्तरजीवी की गर्दन पकड़ ली और धमकी दी कि वह उसे अपने कपड़े और उत्तरजीवी के कपड़ों को जबरन मार देगा और एक बार वुल्वो में अपना जननांग लिंग डाल दिया।

उसके बाद जीवित बचे व्यक्ति ने जिग्नेश को धक्का दिया और कमरे से भाग गया।

शारीरिक उत्पीड़न मौखिक हमले का इतिहास रहा है।”

बी.

5.1. जिस तरह से अनुसंधान अधिकारी अनुसंधान कर रहा था, उससे असंतुष्ट अपीलार्थी/अभियोजक का कहना है कि उसने पश्चिम क्षेत्र के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त को दिनांक 1 का एक आवेदन प्रस्तुत किया जिसमें उससे यह सुनिश्चित करने का अनुरोध किया गया कि अनुसंधान ठीक से की जाए और प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त को गिरफ्तार किया जाए।

सी.

5.2.10 अगस्त, 2022 को पुलिस ने इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा 376 के प्रावधान को 8 अगस्त, 2022 के आवेदन के माध्यम से विषय

एफ. आई. आर. में जोड़ा गया है, प्रत्यर्थी संख्या 2/आरोपी को दी गई जमानत को रद्द करने के लिए विद्वान ए. सी. एम. एम. के समक्ष एक आवेदन दायर किया। उक्त आवेदन को स्वीकार कर लिया गया और 23 अगस्त, 2022 के आदेश के अनुसार, विद्वान एसीएमएम ने 6 अप्रैल, 2022 को प्रतिवादी/आरोपी को दी गई जमानत को रद्द कर दिया।

डी.

5.3.6 सितंबर, 2022 को पुलिस द्वारा अपीलार्थी/अभियोजक का पूरक बयान दर्ज किया गया था जिसमें उसने निम्नानुसार कहा था:-

ई.

“.....मैंने तुरंत उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया लेकिन वह बिस्तर से उठा और मुझे जबरदस्ती बिस्तर पर धकेल दिया। उसने मेरी छाती और पीछे के हिस्से को अनुचित तरीके से छुआ और मेरे द्वारा पहने गए गाउन को पीछे की ओर खींचा। मैं चिल्लाया और उससे अनुरोध किया कि वह मेरे साथ ऐसी हरकत न करे, लेकिन उसने मेरी गर्दन पकड़ ली और मुझे जान से मारने की धमकी दी। उस समय गंभीर भय से मैं पूरी तरह से भयभीत था और

एफ.

कुछ भी सोचने में असमर्थ था। इसके बाद उन्होंने अपनी शर्ट के बटन हटा दिए, अपनी पैंट उतार दी और मुझे कपड़े उतारने की कोशिश की। आगामी हाथापाई में मेरा गाउन मेरी गर्दन और स्तनों के पास फट गया। संघर्ष के दौरान उन्होंने मेरे निकर्स को नीचे खींचा, अपने सदस्य को बाहर निकाला और मेरे निजी हिस्से में घुस गए।”

जी.

5.4.17 सितंबर, 2022 को प्रत्यर्थी No.2/accused ने धारा 438 Cr.P.C के तहत अग्रिम जमानत के लिए आवेदन 9 दायर किया।

एच.

9 2022 की अग्रिम जमानत आवेदन संख्या 1367

1120

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, बोरीवली प्रभाग, डिंडोशी (बोरीवली प्रभाग), गोरेगांव, मुंबई की अदालत के समक्ष विषय एफ. आई. आर. के संबंध में। प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त, राज्य के अधिवक्ता और अपीलार्थी/अभियोजक के अधिवक्ता, जिन्होंने मामले में हस्तक्षेप

आवेदन दायर किया था, द्वारा की गई दलीलों पर ध्यान देने के बाद, विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त की अग्रिम जमानत याचिका को निम्नलिखित टिप्पणियों के साथ खारिज कर दिया:- “12 यह ध्यान रखना उचित है कि Cr.P.C की धारा 438 के तहत दायर आवेदन में आवेदक ने कई तथ्यों का खंडन किया है जो उचित रूप से असामान्य और अजीब प्रतीत होते हैं। हालाँकि आवेदक ने तर्क दिया है कि वह हनी-ट्रैप का शिकार है जिसे पीड़िता ने अपने दोस्तों के साथ पैरा में व्यवस्थित किया था। आवेदन के नंबर 8 में आवेदक ने तर्क दिया है कि वह क्लब एमराल्ड का आजीवन सदस्य है, जहाँ वह मनोरंजन और फिटनेस के लिए जाता था। पैरा में आवेदन का नंबर 14 जो कुछ भी प्रथम दृष्टया कहा गया है वह सामान्य मानव व्यवहार पैटर्न में स्वीकार्य नहीं प्रतीत होता है। इसके बावजूद कि आवेदक खुद को प्रतिष्ठित व्यवसायी होने का दावा कर रहा है, जो आजीवन सदस्य के रूप में क्लब का दौरा करता था, उसने पैरा में कहा है। नं. 14 कि होटल के उक्त कमरे में उसे अभियोजक द्वारा आमंत्रित किया गया था और उसने उसकी गर्दन और गाल पर चूमना शुरू कर दिया और यहां तक कि आवेदक के शरीर पर अपना हाथ रगड़ना शुरू कर दिया और जब आवेदक ने उसे रोका, तो अभियोजक और अधिक आक्रामक हो गया और अचानक रुपये की मांग की। 15,00,000-आवेदक से। 13. आवेदन में दिए गए आधारों को ध्यान में रखते हुए, यह स्पष्ट है कि आवेदक ने इस बात पर विवाद नहीं किया है कि घटना के समय वह उक्त होटल के कमरे में पीड़ित के साथ था। भले ही पूरक बयान की सामग्री को नजरअंदाज कर दिया गया हो, लेकिन प्रथम दृष्टया एफ. आई. आर. के कथनों ने भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा 376 के तहत मामले को स्पष्ट कर दिया। इसलिए मेरा विचार है कि अपराध की गंभीरता और उपरोक्त आरोपों के आलोक में सजा की प्रकृति को देखते हुए, आवेदक द्वारा Cr.P.C की धारा 438 के तहत जमानत देने के लिए कोई प्रथम दृष्टया मामला नहीं बनाया गया है।

बी.

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

प्रभावित आदेश:

6. प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त ने तब अग्रिम जमानत के लिए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। दिनांकित प्रथम आक्षेपित आदेश द्वारा

एच.

1121

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य [हिमा कोहली, जे.] ए.

21 सितंबर, 2022 में, प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त को निम्नलिखित आदेश के साथ अंतरिम सुरक्षा प्रदान की गई थी:-

“1. आवेदक के अधिवक्ता को सुना और राज्य के लिए ए. पी. पी. सीखा।

2. अभियोजक, जो पेशे से एक मॉडल है, द्वारा दायर शिकायत पर 2022 के 06/08/2022 पर C.R.No.915 को MIDC पुलिस स्टेशन में पंजीकृत किया गया और उसने पुलिस स्टेशन को सूचित किया कि उसकी विनम्रता आवेदक द्वारा नाराज थी। इसके परिणामस्वरूप भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा 354, 354-बी, 506 लागू की गई।

बी.

उसी दिन, यानी 06/10/2022 पर, अभियोजक ने अपना पूरक बयान दर्ज कराया और इस बार, उसने इसे आगे बढ़ाते हुए घटना को विस्तार से बताया और कहा कि उसे अनुचित रूप से छूने के बाद, उसे बिस्तर पर धकेल दिया गया और जबरन यौन संबंध बनाने का प्रयास किया गया। हुई हाथापाई में, उसने आरोप लगाया कि उसके कपड़े, जो उसने पहने हुए थे, फटे हुए थे और उसने उसे दरवाजे से बाहर धकेल दिया, लेकिन कमरे से बाहर निकलते समय, उसने उसे धमकी दी कि वह किसी को भी इस घटना के बारे में न बताए। वह रिसेप्शन में आई और फोन किया।

सी.

डी.

एक महीने के बाद यानी 06/09/2022 पर, अभियोजक के संस्करण में और सुधार हुआ है, जहाँ वह कहती है कि भेदक यौन हमला हुआ था और दूसरा वर्णन कि उसने उसे धक्का दिया और स्वागत किया, वही रहता है।

ई.

3. आवेदक को इससे पहले एक अवसर पर जमानत पर रिहा किया गया था, जब विषय सी. आर. ने आई. पी. सी. की धारा 354, 354-बी और 506 का आव्हान किया था, लेकिन पूरक बयान दर्ज किए जाने पर, धारा 376 को सी. आर. विषय में जोड़ा गया है और आवेदक अपनी गिरफ्तारी की आशंका जता रहा है, क्योंकि पहले का आदेश उसके आदेश में काम कर रहा था।

एफ.

अनुग्रह, रद्द कर दिया गया है। अभियोजक के कथन में तारकीय भिन्नताओं को देखते हुए, इसकी सच्चाई का आकलन किए बिना, इस स्तर पर, ये भिन्नताएं ही मुझे एक अंतरिम आदेश के माध्यम से आवेदक की रक्षा करने के लिए राजी करती हैं।

जी.

अनुसंधान में उसके सहयोग और अनुसंधान अधिकारी के सामने आने वाली सामग्री के अधीन, आगे की कार्रवाई का पता लगाया जाएगा कि क्या उसकी हिरासत में पूछताछ आवश्यक है। अतः निम्नलिखित आदेश दिया जाता है:

एच.

1122 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 2 एस. सी. आर.

:आदेश:

(क) एम. आई. डी. सी. पुलिस थाने में पंजीकृत 2022 के C.R.No.915 के संबंध में गिरफ्तारी की स्थिति में, आवेदक-जिग्नेश जसवंतराई मेहता को समान राशि में एक या दो प्रतिभूतियों के साथ <आई. डी. 1,000/- की सीमा तक पी. आर. बॉन्ड प्रस्तुत करने पर जमानत पर रिहा कर दिया जाएगा।

बी.

(ख) आवेदक 27 से 30 सितंबर, 2022 तक दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे के बीच संबंधित पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट करेगा (ग) आवेदक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मामले के तथ्यों से परिचित किसी भी व्यक्ति को कोई प्रलोभन, धमकी या वादा नहीं करेगा ताकि उसे अदालत या किसी पुलिस अधिकारी को तथ्यों का खुलासा करने से रोका जा सके और सबूतों के साथ छेड़छाड़ नहीं की जा सके। आवेदन को 07/10/2022 पर सूचीबद्ध करें।”

सी.

6.1. उपरोक्त आदेश के पारित होने के बारे में पता चलने पर, अपीलार्थी/अभियोजक ने उच्च न्यायालय के समक्ष हस्तक्षेप 11 के लिए एक आवेदन दायर किया। 7 अक्टूबर 2022 के दूसरे विवादित आदेश द्वारा, प्रत्यर्थी No.2/accused द्वारा दायर जमानत आवेदन को निम्नलिखित आदेश के साथ अनुमति दी गई थी:-

डी.

“2. अभियोजक के संस्करण में सुधार को ध्यान में रखते हुए और वह भी एक महीने से अधिक की अवधि के बाद, आवेदक को अंतरिम आदेश द्वारा संरक्षित किया गया था जिसे उसे

जांच अधिकारी को रिपोर्ट करने का निर्देश दिया गया था। तदनुसार, उन्होंने जांच अधिकारी को सूचित किया है, उनका मेडिकल किया जाता है और मोबाइल फोन जब्त कर लिया जाता है।

ई.

3. उपरोक्त के मद्देनजर, चूंकि आवेदक ने अनुसंधान में अपना सहयोग दिया है, इसलिए 21/09/2022 दिनांकित आदेश को पूर्ण बनाया जाता है।”

एफ.

7. उपरोक्त दो आदेशों से व्यथित होकर, अपीलार्थी/अभियोजक ने वर्तमान अपीलों को प्राथमिकता दी है जिसमें 18 नवंबर, 2022 को नोटिस जारी किया गया था। सुनवाई की अगली तारीख से पहले प्रत्यर्थी संख्या 1-राज्य और प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त की ओर से उपस्थिति दर्ज की गई थी और जवाबी हलफनामा दायर करने के लिए समय दिया गया था। प्रत्यर्थी संख्या 1/राज्य और प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त के अधिवक्ता द्वारा जवाबी हलफनामा दायर किए गए हैं।

जी.

11 2022 के अग्रिम जमानत आवेदन No.2594 दिनांक 06.10.2022 A में 2022 का हस्तक्षेप आवेदन No.17150

एच.

1123

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य [हिमा कोहली, जे.] ए.

विद्वान अधिवक्ता के लिए किए गए तर्क:

ए. ऐप्पलेंट/प्रॉसेक्यूट्रिक्स के लिए अधिवक्ता

8. अपीलार्थी/अभियोजक की ओर से पेश हुए विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आर. बसंत ने आग्रह किया है कि अग्रिम जमानत देते समय, उच्च न्यायालय प्रत्यर्थी के खिलाफ लगाए गए आरोपों की प्रकृति और गंभीरता पर ध्यान देने में विफल रहा है।

बी.

अभियोजक के कथन में, स्वयं मुझे एक अंतरिम आदेश के माध्यम से आवेदक की रक्षा करने के लिए राजी किया, "उच्च न्यायालय करने में विफल रहा

इस बात की सराहना करते हैं कि एफ. आई. आर. में दर्ज आरोप स्वयं आई. पी. सी. की धारा 376 के तहत अपराध को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त थे; कि उच्च न्यायालय ने 17

सितंबर, 2022 के आदेश में विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, बोरीवल्ली द्वारा की गई टिप्पणियों को नजरअंदाज कर दिया, जबकि प्रत्यर्थी की अग्रिम जमानत याचिका को इस प्रभाव से खारिज कर दिया कि भले ही पूरक बयानों की सामग्री की अनदेखी की जाती है, एफ. आई. आर. में किए गए कथन प्रथम दृष्टया आई. पी. सी. की धारा 376 के तहत मामला बनाते हैं; कि प्रत्यर्थी संख्या 13 द्वारा दायर अग्रिम जमानत के आवेदन में अपीलकर्ता/अभियोजक द्वारा दायर हस्तक्षेप आवेदन 12 के बावजूद। 2/उच्च न्यायालय के समक्ष अभियुक्त, उसे सुनवाई की अनुमति नहीं दी गई थी; कि प्रत्यर्थी को अग्रिम जमानत देने का आदेश सं. 2/अभियुक्त जमानत के लिए आवेदन पर विचार करते समय न्यायालय द्वारा पालन किए जाने वाले तय किए गए कानूनी सिद्धांतों का उल्लंघन करता है, जैसा कि इस न्यायालय द्वारा कई न्यायिक फैसलों में कहा गया है, जिनमें शामिल हैं -

सी.

डी.

ई.

प्रशांत कुमार सरकार बनाम आशीष चटर्जी और अन्य **14**; कि

उच्च न्यायालय ने इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया कि प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त एक धनी और प्रभावशाली व्यवसायी है जिसने प्राथमिकी दर्ज करने में देरी करने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया और अग्रिम जमानत दिए जाने के बाद, अपीलार्थी/अभियोजक के नुकसान के लिए गवाहों को प्रभावित करने के लिए बाध्य है।

एफ.

ख. प्रत्यर्थीदाता सं. के लिए अधिवक्ता **2**/स्वीकार किया गया

9. दूसरी ओर, श्री संजय आर हेगड़े, प्रत्यर्थी की ओर से उपस्थित वरिष्ठ अधिवक्ता नं। 2/अभियुक्त ने विवादित आदेशों का बचाव किया है और प्रस्तुत किया है कि प्रतिवादी No.2/accused को अंतरिम सुरक्षा प्रदान करने वाले पहले विवादित आदेश के पारित होने के बाद, वह

जी.

12 2022 की अग्रिम जमानत आवेदन संख्या 2594 में 2022 की हस्तक्षेप आवेदन संख्या 17150

13 एबीए नं. 2022 का 2594

एच.

14 (2010) 14 एससीसी 496

1124

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

उसे कई तारीखों पर अनुसंधान के लिए बुलाया गया था और जब भी बुलाया गया था, उसने विधिवत सहयोग किया था और पुलिस स्टेशन को सूचित किया था कि वह सभी अवसरों पर विद्वान ए. सी. एम. एम., अंधेरी और विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, बोरीवल्ली के समक्ष सुनवाई में भाग ले रहा था; कि कथित घटना का कोई चश्मदीद गवाह नहीं है; कि परिस्थितिजनक साक्ष्य और चिकित्सा रिपोर्ट प्रत्यर्थी No.2/accused के खिलाफ अपीलकर्ता/अभियोजक द्वारा लगाए गए आरोपों का समर्थन नहीं करती है; कि आरोपी को अग्रिम जमानत देने के आदेश में हस्तक्षेप करने का कोई औचित्य नहीं है, विशेष रूप से, जब अपीलकर्ता/अभियोजक या राज्य के अधिवक्ता द्वारा जमानत रद्द करने के लिए कोई पर्यवेक्षी परिस्थितियों की ओर इशारा नहीं किया गया है।

बी.

सी.

ग. राज्य के लिए प्रत्यर्थी सं। 1.

10. राज्य के विद्वान अधिवक्ता श्री नितिन लोनकर ने अदालत को सूचित किया है कि 21 अक्टूबर, 2022 को सत्र अदालत के समक्ष तत्काल मामले में आरोप पत्र 15 दायर किया गया था और अभियोजन पक्ष द्वारा 25 गवाहों का हवाला दिया गया है जिनमें से 12 स्वतंत्र गवाह हैं। मामला अब 27 जुलाई, 2023 को आरोप पर बहस के लिए सूचीबद्ध है।

डी.

विश्लेषण, हस्तक्षेप और मामला कानून:

11. हमने पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ता को सुना है और अभिलेखों का अध्ययन किया है। जैसा कि विवादित आदेश के अवलोकन से प्राप्त किया जा सकता है, प्राथमिक आधार जिसने उच्च न्यायालय को प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त को अंतरिम संरक्षण देने के लिए राजी किया था, वह यह है कि अपीलार्थी/अभियोजक ने उसी तारीख की शाम को दर्ज किए गए अपने पहले पूरक बयान में और एक महीने के बाद, 06 सितंबर, 2022 को दर्ज किए गए दूसरे पूरक बयान में अतिरिक्त आरोप लगाकर घटना के अपने संस्करण को सुधारने की कोशिश की, जो पहली बार 06 अगस्त, 2022 के शुरुआती घंटों में प्राथमिकी में दर्ज किया गया था। उच्च न्यायालय के शब्दों में, "तारों में भिन्नताएँ थीं।

ई.

एफ.

अभियोजक का कथन।".उपरोक्त अवलोकन है

दूसरे विवादित आदेश में दोहराया गया और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि प्रत्यर्थी No.2/accused ने जांच अधिकारी को सूचित किया था, उसकी चिकित्सा जांच की गई थी और मोबाइल फोन जब्त कर लिया गया था, पहले पारित अंतरिम आदेश को पूर्ण 16 बना दिया गया था। 11.1.हम उन विचारों पर त्वरित नज़र डालने का प्रस्ताव करते हैं जो अग्रिम जमानत के अनुदान को नियंत्रित करने के लिए होने चाहिए।निर्णयों की एक पंक्ति है जी.

15 जैसा कि जांच अधिकारी 16 द्वारा दायर जवाबी हलफनामे के पैरा 8 में शपथ ली गई है, 21 सितंबर, 2022 के दूसरे विवादित आदेश के माध्यम से ए

एच.

1125

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य [हिमा कोहली, जे.] ए.

इस न्यायालय ने इस तथ्य को रेखांकित किया है कि जमानत के लिए आवेदन पर निर्णय लेते समय, न्यायालय को साक्ष्य का विस्तृत विश्लेषण करने से बचना चाहिए, जिसमें कुछ उचित आधारों पर विचार करने सहित प्रथम दृष्टया मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए जो यह दिखाने के लिए जाएगा कि क्या अभियुक्त ने अपराध किया है या वे तथ्य जो अपराध की गंभीरता को दर्शाते हैं।उस स्तर पर साक्ष्य के विश्लेषण में गहराई से जाने पर स्व-अधिरोपित प्रतिबंध वैध कारणों से है, अर्थात् अभियोजन पक्ष या बचाव पक्ष द्वारा स्थापित मामले के प्रति किसी भी पूर्वाग्रह को रोकने के लिए और मामले के सभी पहलुओं को मुकदमा समाप्त होने तक खुला रखने के लिए।

बी.

12. प्रशांत कुमार सरकार के मामले (ऊपर) में, एक खंड पीठ

सी.

इस न्यायालय ने उन कारकों पर प्रकाश डाला था जिन्हें अग्रिम जमानत याचिका पर विचार करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए और कहा था कि:- “9. हमारा मानना है कि विवादित आदेश स्पष्ट रूप से अस्थिर है।यह सामान्य बात है कि यह न्यायालय आम तौर पर उच्च न्यायालय द्वारा अभियुक्त को जमानत देने या अस्वीकार करने के आदेश में हस्तक्षेप नहीं करता है।तथापि, उच्च न्यायालय पर यह समान रूप से दायित्व है कि वह इस मुद्दे पर इस न्यायालय के कई निर्णयों में निर्धारित बुनियादी सिद्धांतों का पालन करते हुए विवेकपूर्ण, सावधानीपूर्वक और सख्ती से अपने विवेकाधिकार का प्रयोग करे।यह अच्छी तरह से तय

किया गया है कि अन्य परिस्थितियों के अलावा, जमानत के लिए आवेदन पर विचार करते समय जिन कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए वे हैं:

डी.

ई.

((i) क्या यह विश्वास करने के लिए कोई प्रथम दृष्टया या उचित आधार है कि अभियुक्त ने अपराध किया था;

((ख) आरोप की प्रकृति और गंभीरता;

((ग) दोषसिद्धि की स्थिति में सजा की गंभीरता;

एफ.

((iv) जमानत पर रिहा होने पर अभियुक्त के फरार होने या भागने का खतरा;

(v) अभियुक्त का चरित्र, व्यवहार, साधन, पद और स्थिति;

जी.

((vi) अपराध के दोहराये जाने की संभावना;

((vii) गवाहों के प्रभावित होने की उचित आशंका; और

(viii) निश्चित रूप से, जमानत देने से न्याय के विफल होने का खतरा।

एच.

1126 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 2 एस. सी. आर.

[सी. बी. आई. बनाम अमरमणि त्रिपाठी 17, प्रहलाद सिंह भाटी बनाम एन. सी. टी. दिल्ली और अन्य 18 और राम गोविंद उपाध्याय बनाम सुदर्शन सिंह और अन्य 19 के माध्यम से यू. पी. राज्य देखें।13. मसरूर बनाम उत्तर प्रदेश राज्य और अन्य 20 में,

डिवीजन बेंच की ओर से बोलते हुए, न्यायमूर्ति डी. के. जैन ने कहा कि अदालतों को यांत्रिक रूप से जमानत देने से बचना चाहिए और प्रासंगिक विचारों का अभाव इस तरह के आदेश को हस्तक्षेप के लिए अतिसंवेदनशील बना देगा। उक्त आदेश का पैरा 13 प्रासंगिक है और इसे नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:- “13. यद्यपि जमानत देने के चरण में साक्ष्य की विस्तृत जांच और मामले की योग्यता को छूने वाले विस्तृत कारणों से बचा जाना चाहिए, जो अभियुक्त के प्रति पूर्वाग्रह पैदा कर सकते हैं, लेकिन इस तरह के आदेश में यह निष्कर्ष निकालने के लिए कारणों को इंगित करने की आवश्यकता है कि जमानत क्यों दी जा रही थी, विशेष रूप से जहां अभियुक्त पर गंभीर अपराध करने का आरोप लगाया गया है।

बी.

सी.

(महाराष्ट्र राज्य बनाम रितेश **21**, पंचानन मिश्रा बनाम दिगंबर मिश्रा और अन्य **22**, विजय कुमार बनाम नरेंद्र और अन्य **23** और अनवरी बेगम बनाम शेर मोहम्मद और अन्य **24** भी देखें।

डी.

[यह भी देखें -नीरू यादव बनाम उत्तर प्रदेश राज्य और अन्य **25**; अनिल कुमार यादव बनाम राज्य (दिल्ली का राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) और अन्य **26** और महिपाल बनाम राजेश कुमार उपनाम पोलिया और अन्य **27**]

ई.

14. पहले के आदेशों पर गौर करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए जहां अभियुक्तों की जमानत याचिकाओं को खारिज कर दिया गया है, इस न्यायालय ने

कल्याण चंद्र सरकार बनाम राजेश रंजन उर्फ पप्पु यादव और

अन्य **28** इस प्रकार आयोजित किए गए:-

एफ.

17 (2005) 8 एससीसी 21 18 (2001) 4 एससीसी 280 19 (2002) 3 एससीसी 598 20 (2009) 14 एससीसी 286 21 (2001) 4 एससीसी 224 22 (2005) 3 एससीसी 143 23 (2002) 9 एससीसी 364 24 (2005) 7 एससीसी 326 25 (2014) 16 एससीसी 508 26 (2018) 12 एससीसी 129 27 (2020) 2 एससीसी 118 28 (2004) 7 एससीसी 528 ए

जी.

एच.

1127

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य [हिमा कोहली, जे.] ए.

“12. जिन मामलों में पहले की जमानत याचिकाओं को खारिज कर दिया गया है, उनके संबंध में अदालत पर एक और जिम्मेदारी है कि वह उन आधारों को ध्यान में रखते हुए जमानत देने के लिए बाद के आवेदन पर विचार करे जिन पर पहले की जमानत याचिकाओं को खारिज कर दिया गया है और इस तरह के विचार के बाद यदि अदालत की राय है कि जमानत दी जानी है तो उक्त अदालत को विशिष्ट कारण देने होंगे कि इस तरह की पहले की अस्वीकृति के बावजूद जमानत के लिए बाद के आवेदन को क्यों दिया जाना चाहिए।”

बी.

15. सुशीला अग्रवाल और अन्य बनाम राज्य (एन. सी. टी. दिल्ली)

और अन्य 29, पांच न्यायाधीशों की एक संविधान पीठ को विचार के लिए बनाए गए निम्नलिखित दो प्रश्नों पर अलग-अलग संख्या वाली विभिन्न पीठों के परस्पर विरोधी विचारों का सामना करना पड़ा:-

सी.

“(i) क्या दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 438 के तहत किसी व्यक्ति को दिया गया संरक्षण एक निश्चित अवधि तक सीमित होना चाहिए ताकि वह व्यक्ति निचली अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण कर सके और नियमित जमानत ले सके।

((ii) क्या अग्रिम जमानत का जीवन उस समय और चरण में समाप्त होना चाहिए जब अभियुक्त को अदालत द्वारा तलब किया जाता है।”

डी.

एक व्यापक चर्चा के बाद, संविधान पीठ ने कानून को अलग किया और पैरा 91 में उपरोक्त संदर्भ का उत्तर निम्नलिखित शब्दों में दिया:-

ई.

“ 91.1. प्रश्न 1 के संबंध में, यह न्यायालय मानता है कि दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 438 के तहत किसी व्यक्ति को दिया गया संरक्षण निश्चित रूप से एक निश्चित अवधि तक सीमित नहीं होना चाहिए; इसे समय पर किसी भी प्रतिबंध के बिना अभियुक्त के पक्ष में सुनिश्चित करना चाहिए। धारा 438 (2) के साथ पठित धारा 437 (3) के तहत सामान्य शर्तें लागू की जानी चाहिए; यदि किसी अपराध के संबंध में विशिष्ट तथ्य या विशेषताएं हैं, तो अदालत के लिए कोई भी उचित शर्त (राहत की निश्चित प्रकृति, या इसे किसी घटना से जोड़ा जाना सहित), आदि लागू करने का अधिकार है।

एफ.

91.2. जहाँ तक इस न्यायालय को निर्दिष्ट दूसरे प्रश्न का संबंध है, यह अभिनिर्धारित किया जाता है कि अग्रिम जमानत आदेश का जीवन या अवधि सामान्य रूप से उस समय और चरण में समाप्त नहीं होती है जब अभियुक्त को अदालत द्वारा तलब किया जाता है, या जब आरोप बनाए जाते हैं, लेकिन मुकदमे के अंत तक जारी रह सकता है। पुनः, यदि कोई विशेष या विशिष्ट विशेषताएं हैं जो न्यायालय को अग्रिम जमानत की अवधि को सीमित करने के लिए आवश्यक बनाती हैं, तो उसके लिए ऐसा करने की अनुमति है।”

जी.

एच.

1128

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

16. संदर्भ को दिए गए उत्तरों के आलोक में, संविधान पीठ ने उन कारकों को स्पष्ट किया जिन्हें दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 438 के तहत दायर आवेदनों पर विचार करते समय ध्यान में रखने की आवश्यकता होगी और कहा कि:-

“ 92.3.धारा 438 सी. आर. पी. सी. में कुछ भी अदालतों को समय के संदर्भ में, या एफ. आई. आर. दर्ज करने पर, या किसी भी गवाह का बयान दर्ज करने पर, पुलिस द्वारा राहत देने के लिए मजबूर या बाध्य नहीं करता है।

बी.

जाँच या जाँच, आदि। एक आवेदन पर विचार करते समय (अग्रिम जमानत देने के लिए) अदालत को अपराध की प्रकृति, व्यक्ति की भूमिका, अनुसंधान के पाठ्यक्रम को प्रभावित करने की संभावना, या सबूतों के साथ छेड़छाड़ (गवाहों को डराने सहित), न्याय से भागने की संभावना (जैसे देश छोड़ना), आदि पर विचार करना होता है।

सी.

92.4.न्यायालयों को आम तौर पर अग्रिम जमानत देने या अस्वीकार करने पर विचार करते समय अपराधों की प्रकृति और गंभीरता, आवेदक की भूमिका और मामले के तथ्यों जैसे विचारों द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए। देना है या नहीं, यह विवेकाधिकार का विषय है; समान रूप से क्या और यदि ऐसा है, तो किस प्रकार की विशेष शर्तें लगाई जानी हैं (या नहीं लगाई जानी हैं), यह मामले के तथ्यों पर निर्भर करता है, और अदालत के विवेकाधिकार के अधीन है।XXXXXXXXXX

डी.

ई.

92.6.अग्रिम जमानत का आदेश इस अर्थ में "पूर्ण" नहीं होना चाहिए कि यह अभियुक्त को आगे के अपराध करने और गिरफ्तारी से अनिश्चितकालीन संरक्षण की राहत का दावा करने में सक्षम नहीं बनाता है। यह उस अपराध या घटना तक सीमित होना चाहिए, जिसके लिए किसी विशिष्ट घटना के संबंध में गिरफ्तारी की आशंका मांगी जाती है। यह भविष्य की किसी घटना के संबंध में काम नहीं कर सकता है जिसमें अपराध करना शामिल है।”

एफ.

[जोर दिया गया]

17. मियाकला धर्मराजम और अन्य बनाम राज्य

तेलंगाना और अन्य 30, यह अभिनिर्धारित करते हुए कि अपीलीय न्यायालय या एक उच्चतर न्यायालय जमानत देने के आदेश को रद्द कर सकता है यदि संबंधित न्यायालय जिसने जमानत दी, प्रासंगिक कारकों पर विचार करने में विफल रहा, इस न्यायालय ने कहा कि:-

जी.

30 (2020) 2 एससीसी 743 ए

एच.

1129

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य [हिमा कोहली, जे.] ए.

“9. यह एक सामान्य कानून है कि जमानत को उन मामलों में रद्द किया जा सकता है जहां जमानत देने का आदेश गंभीर दुर्बलता से ग्रस्त है जिसके परिणामस्वरूप न्याय की विफलता होती है। यदि जमानत देने वाली अदालत अभियुक्त की प्रथम दृष्टया संलिप्तता का संकेत देने वाली प्रासंगिक सामग्री की अनदेखी करती है या अप्रासंगिक सामग्री को ध्यान में रखती है, जिसकी अभियुक्त को जमानत देने के सवाल से कोई प्रासंगिकता नहीं है, तो उच्च न्यायालय या सत्र न्यायालय जमानत रद्द करने में उचित होगा।” 18. सर्वोच्च भिवंडी में उपरोक्त दृष्टिकोण को दोहराया गया है।

बी.

वाडा मनोर इन्फ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य 31

19. प्रदीप राम बनाम झारखंड राज्य और अन्य 32 में

सी.

एक ऐसी स्थिति से निपटने के लिए जहां एक आपराधिक मामले में एक आरोपी को जमानत पर रिहा कर दिया गया था, जिसमें बाद में नए अपराध जोड़े गए थे और यह सवाल उठाया गया था कि क्या आरोपी को हिरासत में लेने के लिए पहले दी गई जमानत को रद्द करना आवश्यक होगा, इस न्यायालय की एक खंड पीठ ने राजस्थान, मद्रास, इलाहाबाद और जम्मू-कश्मीर के उच्च न्यायालयों सहित कई उच्च न्यायालयों द्वारा लिए गए दृष्टिकोण की जांच करने के साथ-साथ इस पहलू पर पिछले फैसलों में इस न्यायालय द्वारा की गई टिप्पणियों की भी जांच की और इस प्रकार निर्णय दिया:-

डी.

“31. पूर्वगामी चर्चाओं को ध्यान में रखते हुए, हम ऐसी परिस्थिति के संबंध में निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं जहाँ किसी अभियुक्त को जमानत देने के बाद, आगे संज्ञेय और गैर-जमानती अपराध जोड़े जाते हैं:

ई.

31.1. अभियुक्त आत्मसमर्पण कर सकता है और नए जोड़े गए संज्ञेय और गैर-जमानती अपराधों के लिए जमानत के लिए आवेदन कर सकता है। जमानत देने से इनकार करने की स्थिति में आरोपी को निश्चित रूप से गिरफ्तार किया जा सकता है।

एफ.

31.2. जाँच एजेंसी अभियुक्त की गिरफ्तारी और उसकी हिरासत के लिए दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 437 (5) या 439 (2) के तहत अदालत से आदेश ले सकती है।

31.3 [एड.: पैरा 31.3 को दिनांक 31-7-2020 के आधिकारिक पत्र के माध्यम से सही किया गया है]। अदालत, दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 437 (5) या 439 (2) के तहत शक्ति का प्रयोग करते हुए, उस आरोपी को हिरासत में लेने का निर्देश दे सकती है जिसे उसकी जमानत रद्द होने के बाद पहले ही जमानत दे दी गई है। धारा 437 (5) के साथ-साथ धारा के तहत शक्ति का प्रयोग करते हुए न्यायालय

जी.

31 (2021) 8 एससीसी 753 32 (2019) 17 एससीसी 326

एच.

1130

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

439(2) वह व्यक्ति जिसे पहले ही जमानत दी जा चुकी है, उसे गिरफ्तार करने का निर्देश दे सकता है और उसे गंभीर और गैर-जमानती अपराधों को जोड़ने पर हिरासत में ले सकता है जो हमेशा पहले की जमानत को रद्द करने के आदेश के साथ आवश्यक नहीं हो सकते हैं।

31.4. ऐसे मामले में जहाँ किसी अभियुक्त को पहले ही जमानत दी जा चुकी हो, जांच प्राधिकरण किसी अपराध या अपराध को जोड़ने पर अभियुक्त को गिरफ्तार करने के लिए आगे नहीं बढ़ सकता है, लेकिन अपराध या अपराधों को जोड़ने पर अभियुक्त को गिरफ्तार

करने के लिए उसे उस अदालत से अभियुक्त को गिरफ्तार करने का आदेश प्राप्त करने की आवश्यकता होती है जिसने जमानत दी थी।”

बी.

20. जैसा कि प्रदीप राम (उपरोक्त) में की गई टिप्पणियों से पता चलता है, एक गंभीर अपराध को जोड़ना एक ऐसी परिस्थिति हो सकती है जहां एक अदालत यह निर्देश दे सकती है कि आरोपी को गिरफ्तार किया जाए और हिरासत में लिया जाए, भले ही पहले उन अपराधों के संबंध में जमानत का आदेश उसके पक्ष में दिया गया था, जिन अपराधों के लिए उस पर आरोप लगाया गया था जब उसके जमानत के आवेदन पर विचार किया गया था और एक अनुकूल आदेश पारित किया गया था। जमानत देने के बाद, एफ. आई. आर. में और संज्ञेय और गैर-जमानती अपराध जोड़े जाने की स्थिति में एक आरोपी के लिए उपलब्ध उपाय, उसके लिए आत्मसमर्पण करना और नए जोड़े गए अपराधों के संबंध में जमानत के लिए नए सिरे से आवेदन करना है। जाँच एजेंसी को 437 (5) 33 और 439 (2) 34 के प्रावधानों को लागू करके अभियुक्त की अभिरक्षा की मांग करने के लिए अदालत का रुख करने का भी अधिकार है, जो कानून के अध्याय XXXVIII के तहत आता है जो जमानत और बांड से संबंधित प्रावधानों से संबंधित है। ऐसा आवेदन दायर किए जाने पर, वह न्यायालय जिसने अभियुक्त को जमानत पर रिहा किया हो या अपीलीय न्यायालय/उच्च न्यायालय ने उसे प्रदत्त विशेष शक्तियों का प्रयोग करते हुए, किसी ऐसे व्यक्ति को, जिसे पहले जमानत पर रिहा किया गया हो, गिरफ्तार करने और हिरासत में लेने का निर्देश दे सकता है।

सी.

डी.

ई.

एफ.

21. तत्काल मामले के तथ्यों पर वापस आते हुए, यह विवाद में नहीं है कि जब प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त ने 6 अगस्त, 2022 को विद्वान ए. सी. एम. एम. के समक्ष जमानत के लिए एक आवेदन दायर किया, तो एफ. आई. आर. में उल्लिखित अपराध भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा 354, 354-बी और 506 के तहत थे। उसे उसी दिन मुख्य रूप से गैर-अनुपालन के आधार पर जमानत दी गई थी

जी.

33 धारा 437 (5)-कोई भी न्यायालय जिसने किसी व्यक्ति को उप-धारा (1) या उप-धारा (2) के तहत जमानत पर रिहा किया है, यदि वह ऐसा करना आवश्यक समझता है, तो निर्देश दे सकता है कि ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार किया जाए और उसे हिरासत में लिया जाए।

34 धारा 439 (2)-कोई उच्च न्यायालय या सत्र न्यायालय यह निर्देश दे सकता है कि इस अध्याय के तहत जमानत पर रिहा किए गए किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार किया जाए और उसे हिरासत में लिया जाए।

एच.

1131

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य [हिमा कोहली, जे.] ए.

धारा 41-ए दंड प्रक्रिया भारतीय दण्ड संहिता। इसके बाद, आई. पी. सी. की धारा 376 के तहत अपराध को उसी एफ. आई. आर. में जोड़ा गया और अपराध को आई. पी. सी. की धारा 376, 354, 354-बी और 506 (2) के तहत अपराधों में बढ़ा दिया गया। घटना के इस मोड़ पर, राज्य ने प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त को दी गई जमानत 36 को रद्द करने के लिए एक आवेदन दायर किया जिसमें कहा गया था कि शुरू में, उस पर आई. पी. सी. की धारा 354, 354-बी और 506 के तहत आरोप लगाया गया था, लेकिन, अपीलकर्ता/अभियोजक का बयान दर्ज करने के दौरान, लगाए गए आरोपों ने धारा 376 के तहत एक अपराध बना दिया जिसे विषय एफ. आई. आर. में जोड़ा जाना था और इसलिए, उसके पक्ष में दी गई जमानत को रद्द करने की आवश्यकता थी और उसे हिरासत में लेने की आवश्यकता थी। उक्त आवेदन को विद्वान ए. सी. एम. एम. द्वारा 23 अगस्त, 2022 के आदेश के माध्यम से अनुमति दी गई थी। इसने प्रत्यर्थी को अग्रिम जमानत के लिए विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, बोरीवल्ली की अदालत का दरवाजा खटखटाने के लिए मजबूर कर दिया। एक सुविचारित आदेश द्वारा, उक्त आवेदन को खारिज कर दिया गया था और उसके द्वारा की गई याचिका कि वह हनीट्रेप का शिकार हुआ था, उस पर विश्वास नहीं किया गया था। प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त की इस दलील पर भी विचार किया गया और खारिज कर दिया गया कि अपीलार्थी/अभियोजक पूरक बयान 37 में अपने बयान में सुधार कर रहा था और यह देखा गया कि भले ही उक्त बयानों की अनदेखी की जाए, लेकिन प्रथम दृष्टया प्राथमिकी में भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा 376 के तहत अपराध करने के लिए पर्याप्त सामग्री थी।

बी.

सी.

डी.

22. आश्चर्य की बात है कि दोनों विवादित आदेशों में उपरोक्त पहलुओं में से किसी को भी नहीं छुआ गया है। कथित अपराध की प्रकृति और गंभीरता की उपेक्षा की गई है। इसलिए अपीलार्थी/अभियोजक की तुलना में अभियुक्त के वित्तीय कद, स्थिति और स्थिति की अनदेखी की गई है। उच्च न्यायालय ने प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त के पक्ष में तीन पैराग्राफ के संक्षिप्त आदेश में अग्रिम जमानत दे दी है।

ई.

"अभियोजक के कथन में तारों की भिन्नताओं" का अर्थ है

एफ.

जिससे कि मूल रूप से प्राथमिकी में जो दर्ज किया गया था, वह बलात्कार का अपराध नहीं था, जैसा कि भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा 375 में परिभाषित किया गया है, जो एक गलत धारणा है। भले ही अपीलार्थी/अभियोजक का पहला पूरक बयान 6 अगस्त, 2022 की शाम को दर्ज किया गया हो, जिस तारीख को प्रत्यर्थी संख्या 2/आरोपी के खिलाफ उसी दिन की पहली छमाही में प्राथमिकी दर्ज की गई थी, उसका दूसरा पूरक बयान 6 सितंबर, 2022 को दर्ज किया गया था और उस डॉक्टर की चिकित्सा-कानूनी रिपोर्ट जिसने 8 अगस्त को अपीलार्थी/अभियोजक की जांच की थी,

जी.

36 तिथि 10 अगस्त, 2022

37 दिनांक 06 अगस्त, 2022 और 06 सितंबर, 2022

एच.

1132

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

2022, एक पल के लिए अलग रखे जाने पर, हम पाते हैं कि प्राथमिकी में अभी भी पर्याप्त सामग्री थी जो प्रथम दृष्टया भारतीय दण्ड संहिता सी. की धारा 376 के प्रावधान को आकर्षित करेगी। हमारी राय में, इन कारकों ने उच्च न्यायालय को अग्रिम जमानत देने के लिए प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त के पक्ष में अपने विवेकाधिकार का प्रयोग करने से मना करना चाहिए था।

23. एक अन्य कारण जिसने विवादित आदेशों में हस्तक्षेप करने के लिए इस न्यायालय के साथ वजन किया है, वह यह है कि अपीलकर्ता/अभियोजक ने उच्च न्यायालय के समक्ष प्रत्यर्थी द्वारा दायर अग्रिम जमानत याचिका में हस्तक्षेप के लिए एक आवेदन दायर करने के बावजूद, उसे सुनवाई का खर्च नहीं दिया गया था। कम से कम दूसरे विवादित आदेश का अवलोकन उक्त स्थिति को नहीं दर्शाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि राज्य उपस्थित था और उक्त कार्यवाही में उसका प्रतिनिधित्व किया गया था, लेकिन अभियोजक के अधिकार को केवल इसी कारण से कम नहीं किया जा सकता था। इस प्रकार के अपराध में जहां आम तौर पर,

स्वयं अभियोजक के अलावा कोई अन्य गवाह नहीं होता है, उच्च न्यायालय के लिए अपीलार्थी को अपनी बात सुनाना और भी अधिक अनिवार्य था।

बी.

सी.

डी.

24. हमारा दृष्टिकोण तीन लोगों द्वारा की गई टिप्पणियों के अनुरूप है -

इस न्यायालय की न्यायाधीशों की पीठ ने जगजीत सिंह और अन्य बनाम आशीष मिश्रा उपनाम मोनू और अन्य 39 मामले में, जिसमें पीठ की ओर से बोलते हुए,

न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने पीड़ित की सुनवाई के अधिकार के संबंध में निम्नलिखित प्रासंगिक टिप्पणियां कीं और भारत के विधि आयोग द्वारा अपनी 154 वीं रिपोर्ट में की गई सिफारिशों की ओर इशारा किया जिसमें "

ई.

पीड़ित या उसके कानूनी प्रतिनिधि का प्रत्येक आपराधिक कार्यवाही में एक पक्ष के रूप में शामिल होने का अधिकार जहां आरोप 7 साल या उससे अधिक के कारावास से दंडनीय हैं, इस प्रकार देखा गया:-

"19. यह भी सिफारिश की गई थी कि पीड़ित को अपनी पसंद के अधिवक्ता द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने के अधिकार के साथ सशस्त्र होना चाहिए, और यदि वह इसे वहन करने की स्थिति में नहीं है, तो राज्य के खर्च पर एक अधिवक्ता प्रदान करना चाहिए। पीड़ित के आपराधिक मुकदमे में भाग लेने के अधिकार और अनुसंधान की स्थिति जानने और आवश्यक कदम उठाने या जमानत देने या रद्द करने के समय सहित आपराधिक कार्यवाही के हर महत्वपूर्ण चरण में सुनवाई के अधिकार को भी समिति द्वारा विधिवत मान्यता दी गई थी। बार-बार न्यायिक हस्तक्षेप, समय-समय पर की गई सिफारिशों के साथ, जैसा कि ऊपर संक्षेप में देखा गया है, ने संसद को दंड प्रक्रिया संहिता (संशोधन) अधिनियम को लागू करने के लिए प्रेरित किया।

एफ.

जी.

38 2002 का आई. ए. सं. 17150 39 (2022) 9 एस. सी. सी. 321 ए

एच.

1133

एम. एस. एक्स बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य [हिमा कोहली, जे.] ए.

2008, जिसने न केवल धारा 2 (डब्ल्यू. ए.) के तहत "पीड़ित" की परिभाषा को जोड़ा, बल्कि मुकदमे के विभिन्न चरणों में ऐसे पीड़ितों के विभिन्न अधिकारों को वैधानिक रूप से मान्यता दी।

20. यह उल्लेख करना उचित है कि विधायिका ने विचारपूर्वक "पीड़ित" अभिव्यक्ति को एक व्यापक और विस्तृत अर्थ दिया है।

जिसका अर्थ है "एक व्यक्ति जिसे उस कार्य या चूक के कारण कोई नुकसान या चोट लगी है जिसके लिए अभियुक्त व्यक्ति पर आरोप लगाया गया है और" पीड़ित "अभिव्यक्ति में उसका अभिभावक या कानूनी उत्तराधिकारी शामिल है।"

बी.

25. यह याद रखना चाहिए कि वर्तमान मामले में, आपराधिक न्याय का तंत्र अपीलार्थी/अभियोजक के अलावा किसी और द्वारा शुरू नहीं किया गया है। वह वही थी जिसने होटल के स्वागत क्षेत्र से '100' नंबर डायल किया था जहां कथित रूप से अपराध हुआ था। वह वही थी जिसने अपने मामले में जांच अधिकारियों द्वारा अपनाई गई उदासीनता और जड़ता की शिकायत करते हुए पुलिस पदानुक्रम में वरिष्ठ अधिकारियों से संपर्क किया था। विशेष रूप से, उन्होंने प्रत्यर्थी द्वारा विद्वत अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश के समक्ष दायर अग्रिम जमानत याचिका में एक हस्तक्षेप आवेदन दायर किया था और जैसा कि पारित आदेश से परिलक्षित होता है, उनके अधिवक्ता को सुनवाई की अनुमति दी गई थी, जिसके बाद उक्त आवेदन को खारिज कर दिया गया था। हालांकि, जब प्रत्यर्थी द्वारा दायर अग्रिम जमानत याचिका में अपीलार्थी/अभियोजक द्वारा उच्च न्यायालय के समक्ष हस्तक्षेप 40 के लिए इसी तरह का आवेदन दायर किया गया था, तो ऐसा प्रतीत होता है कि उसके द्वारा की गई याचिकाओं पर ध्यान नहीं दिया गया था, हालांकि उसके वकील की उपस्थिति का उल्लेख आदेश पत्र में मिलता है। हम इस बात पर ध्यान देने के लिए विवश हैं कि इस तरह का दृष्टिकोण आपराधिक कार्यवाही में भाग लेने के अभियोजक के अधिकार को पहचानने में विफलता के समान है जिसमें अभियुक्त द्वारा अग्रिम जमानत के लिए आवेदन का विरोध करने का अधिकार शामिल होगा। जब प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त के पक्ष में दिए गए अग्रिम जमानत के पहले विवादित आदेश की पुष्टि दूसरे विवादित आदेश द्वारा की गई थी, तब अपीलार्थी/अभियोजक को एक सार्थक सुनवाई से वंचित कर दिया गया था, यह एक अतिरिक्त कारक है जो इस न्यायालय के साथ विवादित आदेशों में हस्तक्षेप करने के लिए प्रबल है।

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

निष्कर्ष:

26. उपरोक्त कारणों से, 21 सितंबर, 2022 और 07 अक्टूबर, 2022 के दो विवादित आदेशों में अग्रिम जमानत दी गई है।

40 2022 का हस्तक्षेप आवेदन संख्या 17150

एच.

1134

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 2 एस सी आर।

प्रत्यर्थी संख्या 2/अभियुक्त को कायम नहीं रखा जा सकता है और उन्हें खारिज कर दिया जाता है और अलग कर दिया जाता है। प्रत्यर्थी No.2/accused के जमानत बांड रद्द कर दिए जाते हैं।

27. हालाँकि, हम यह जोड़ने में जल्दबाजी करते हैं कि इस न्यायालय ने मामले के गुण-दोष पर कोई राय व्यक्त नहीं की है। इस मामले में आरोप पत्र पहले ही दाखिल किया जा चुका है। यदि प्रत्यर्थी उपयुक्त न्यायालय के समक्ष धारा 439 Cr.P.C के तहत एक आवेदन पेश करता है, तो उस पर अपने गुण-दोष के आधार पर और कानून के अनुसार विचार किया जाएगा, जो यहां ऊपर की गई टिप्पणियों से अप्रभावित होगा।

बी.

28. अपीलों का निपटारा उपरोक्त शर्तों पर किया जाता है।

सी.

रजिस्ट्री के लिए निर्देश

29. मामले में लगाए गए आरोपों की संवेदनशीलता और शिकायत किए गए अपराध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, अपीलार्थी/अभियोजक की पहचान की रक्षा करना अनिवार्य है। इन कार्यवाही में उनकी पहचान "सुश्री एक्स" के रूप में की गई है। तत्काल मामले में, रजिस्ट्री को रिकॉर्ड से अपीलार्थी/अभियोजक का नाम हटाने के लिए तत्काल कदम उठाने का निर्देश दिया जाता है। अब से, रजिस्ट्री यह सुनिश्चित करेगी कि वर्तमान जैसे संवेदनशील मामलों में, यदि याचिका में अभियोजक का नाम सामने आता है, तो मामले को उचित आदेशों के लिए

अदालत के समक्ष रखने के लिए मंजूरी देने से पहले उसे नाम बदलने के लिए विद्वान अधिवक्ता को वापस कर दिया जाता है।

डी.

ई.

अंकित ज्ञान

अपीलों का निपटारा किया गया।

(सहायक: आरश चौधरी, एलसीआरए)

एफ.

जी.

एच.